



आयुर्वेद ही दुनिया में केवल ऐसी चिकित्सा पद्धति है जिसने मधुमेह (शुगर) के लक्षणों सम्बन्धी पूर्ण ज्ञान व इस रोग का निदान उपलब्ध कराया। आयुर्वेद को वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन द्वारा मान्यता प्राप्त है। आयुर्वेद ग्रन्थों जैसे चरक-संहिता (600 और 300 ई0पू0) आदि में मधुमेह का जिक्र मिलता है कि अनियमित रहन-सहन, वसायुक्त पदार्थों का खानपान तथा आरामदायक जीवनशैली से तथा शरीर की स्थूलता आदि कारणों से पैन्क्रियास कमजोर हो जाता है और यह अपना काम ठीक ढंग से नहीं कर पाता। इंसुलिन बनाने वाली लैंगरहैन्स कोशिकाओं की संख्या कम हो जाती है अतः कम इंसुलिन पैदा होने के कारण शरीर में इंसुलिन की कमी हो जाती है जिसके फलस्वरूप खून में शूगर (ग्लूकोज) की मात्रा बढ़ जाने से इसकी अतिरिक्त मात्रा मूत्र के साथ निकलने लगती है। इस तरह से मधुमेह की शिकायत आरम्भ हो जाती है।

आयुर्वेदिक तत्वों की मधुमेह में महत्त्वता :-

मधुमेह को ठीक करने के लिए पूरा असरदार इलाज चाहिए। बहुत सी उपलब्ध दवाईयाँ मधुमेह के इलाज में पूरी तरह से असर नहीं करती बल्कि यह कुछ समय के लिए अपना प्रभाव दिखा कर बाद में दूसरे रोगों का कारण बन जाती हैं जैसे हाइपोग्लाइसीमिया, गैंग्रिन, रेटीनोपैथी, न्यूरोपैथी, मेक्रो वेस्कुलर डिस्ऑर्डर आदि। इस तरह की जलज्वरों को ध्यान में रखते हुए दुनिया में आयुर्वेदिक दवाईयों की महत्त्वता बढ़ रही है क्योंकि आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियाँ भरोसेमंद, सुरक्षित और बहुपयोगी हैं और इन जड़ी-बूटियों की वैज्ञानिक जांच-परख से यह सिद्ध हो गया है कि यह हर प्रकार की मधुमेह (शुगर) के लिए लाभदायक व सुरक्षित हैं जिसके फलस्वरूप इन जड़ी-बूटियों से तैयार दवाईयाँ भी मधुमेह (शुगर) की रोकथाम के लिए उपयोगी हैं।

मुख्य हर्बल तत्व :

हर्बल न्यूट्रो डाय्या पाऊडर में मिश्रित बहुउपयोगी व लाभकारी हर्बल तत्व जैसे गुडमर आँवला, नीम, शिलाजीत, जामुन गुठली, करेला आदि अनेक बहुमूल्य उपयोगी तत्व डायबेटिज से राहत दिलाकर शरीर को स्वस्थ बनाते हैं।

विशेष लाभ व गुण :-

आँवला : प्रकृति द्वारा मानव जाति को मिला सबसे अद्भुत उपहार। आँवले में संतरे से 20 गुना अधिक विटामिन सी पाया जाता है। शुगर को नियंत्रित करने के लिये पैन्क्रियास को सक्रिय करके इन्सुलिन का निर्माण बढ़ाता है।

नीम : नीम बिना किसी दुष्प्रभाव के शुगर को नियंत्रित करता है। नीम शरीर में इन्सुलिन की आवश्यकता को प्राकृतिक रूप से कम करता है। रक्त वाहिनियों में रक्त-प्रवाह को सुधारता है। टाईप 1 व 2, दोनों प्रकार की शुगर के लिये लाभदायक।

शिलाजीत : रक्त की गुणवत्ता को बढ़ाता है। शुगर को रक्त में सम्मिलित नहीं होने देता। पैन्क्रियास की क्रियाशीलता को बढ़ाता है। मूत्र के साथ शरीर के विशैले पदार्थों को शरीर से बाहर निकालता है।

जामुन गुठली : रक्त में शुगर के स्तर को तेजी से कम करके रोगी के स्वास्थ्य को सुधारती है। विटामिन्स, मिनरल्स, कार्बोहाइड्रेट्स व पौशक तत्वों का प्राकृतिक स्रोत। ग्लूकोस के अधिक निर्माण होने पर स्टार्च को शुगर में बदलने से रोकती है।

करेला : करेले में हाईपोग्लैसेमिक नामक तत्व पाया जाता है जिसमें इन्सुलिन जैसे गुण होते हैं। इस कारण किसी भी तरह की शुगर को प्राकृतिक तरीके से नियंत्रित करने के लिये प्राचीन काल से इसका बहुत उपयोग किया जाता है। करेला आवश्यक मिनरल्स व विटामिन ए, बी1, बी2, सी तथा लौह का प्राकृतिक स्रोत है तथा यह संक्रमण को रोकता है।

गुण :-

- 1) शुगर को नियंत्रित करने का हर्बल फॉर्मूला अब पाउडर में।
- 2) पाउडर को गिलास में घोले और पीयें।
- 3) शुगर से होने वाली कमजोरी को कम करे और आपको स्वस्थ रखे।

सेवन विधि : मधुमेह (शुगर) की रोकथाम व नियमितता के लिए न्यूट्रो डायबेटिक पाउडर का प्रयोग ब्लड शुगर के हिसाब से निम्नलिखित ढंग से कर सकते हैं :

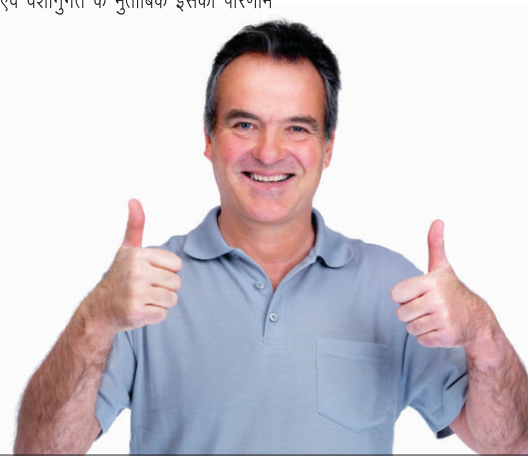
शुगर के नये मरीज के लिए : पाउडर को दिन में तीन बार थोड़े गर्म पानी के साथ या चिकित्सक की परामर्शानुसार लें। स्वास्थ्य व आहार के निर्धारित नियमों का उल्लंघन, ब्लड शुगर स्तर के नियन्त्रण पर निर्भर करता है।

रख-रखाव नोट : धूप व नमी रहित ठण्डे स्थान में रखें।

यान देने योग्य बातें : अच्छे लाभ प्राप्त करने के लिए मदिशपान से परहेज करें। प्रतिदिन कोई सामान्य कसरत या एक-दो किलोमीटर सैर करें।

सार : न्यूट्रो डायबेटिक पाउडर से मिलने वाले लाभ प्रत्येक मधुमेह मरीज के लिए अलग-अलग हो सकते हैं। मधुमेह का इलाज चुस्ती व सावधानी पर निर्भर करता है। हर पंद्रह दिन बाद शुगर की जांच करवाते रहना चाहिए क्योंकि इस इलाज में मधुमेह (शुगर) वाले मरीज का कर्तव्य डाक्टर से ज्यादा महत्त्व रखता है। अच्छे लाभ प्राप्त करने के लिए नियमित जीवन शैली अपनायें।

नोट: व्यक्ति की आयु एवं वंशानुगत के मुताबिक इसका परिणाम अलग-अलग हो सकता है।



जीवन में मिठास बनाए रखें

